

डॉ. रॉबर्ट पीटरसन, ल्यूक-एक्ट्स का धर्मशास्त्र सत्र 17, पीटरसन, प्रेरितों के काम में चर्च, भाग 4, पॉल जेल में लेकिन सुसमाचार; आईएच मार्शल, 1) इतिहास में ईश्वर का उद्देश्य, 2) मिशन और संदेश

यह डॉ. रॉबर्ट ए. पीटरसन द्वारा ल्यूक-एक्ट्स के धर्मशास्त्र पर दिए गए उनके उपदेश हैं। यह सत्र 17 है, पीटरसन, द चर्च इन एक्ट्स, भाग 4, पॉल इन प्रिज़न, बट द गॉस्पेल।, हॉवर्ड मार्शल, 1) इतिहास में ईश्वर का उद्देश्य, 2) मिशन और संदेश।

पिता, हमें आशीर्वाद दें, हम प्रार्थना करते हैं, जैसे कि हम आपके वचन और इसकी शिक्षा का अध्ययन करते हैं, यीशु के पवित्र नाम में, आमीन। धर्मशास्त्र में लूका, प्रेरितों के काम की पुस्तक, प्रेरितों के काम में मेरे अपने नए नियम के लोग, बिंदु नौ, पौलुस जेल में है, लेकिन सुसमाचार बंधा नहीं है, प्रेरितों के काम 28। लूका 28 हमने पाया कि बहुत महत्वपूर्ण था, और यह प्रेरितों के काम की पुस्तक के अंतिम अध्याय के लिए भी ऐसा ही है, जिसे उपेक्षित किया गया है।

प्रेरितों के काम 28, मैं पद 17 से शुरू करते हुए संदर्भ को समझना चाहता हूँ। तीन दिन के बाद, पौलुस ने यहूदियों के स्थानीय नेताओं को एक साथ बुलाया, और जब वे इकट्ठे हुए, तो उसने उनसे कहा, हे भाईयों, मैंने अपने लोगों या अपने पूर्वजों के रीति-रिवाजों के विरुद्ध कुछ भी नहीं किया है, फिर भी मुझे यरूशलेम से कैदी के रूप में रोमियों के हाथों में सौंप दिया गया। जब उन्होंने मेरी जांच की, तो उन्होंने मुझे स्वतंत्र करना चाहा क्योंकि मेरे मामले में मृत्युदंड का कोई कारण नहीं था।

लेकिन यहूदियों के विरोध के कारण मुझे कैसर से अपील करनी पड़ी, हालाँकि मेरे पास अपने राष्ट्र के विरुद्ध कोई अभियोग नहीं था। इसलिए, इसलिए, मैंने आपसे मिलने और आपसे बात करने के लिए कहा है, क्योंकि यह इस्राएल की आशा के कारण है कि मैं इस जंजीर को पहने हुए हूँ। और उन्होंने उससे कहा, हमें यहूदिया से आपके बारे में कोई पत्र नहीं मिला है, और यहाँ आने वाले भाइयों में से किसी ने भी आपके बारे में कोई रिपोर्ट या बुरा नहीं कहा है, लेकिन हम आपसे सुनना चाहते हैं कि आपके विचार क्या हैं, क्योंकि इस संप्रदाय के संबंध में, हम जानते हैं कि हर जगह इसके खिलाफ बात की जाती है।

मुझे तुरन्त पहले की आयत पढ़नी चाहिए थी, और जब हम रोम में आए, प्रेरितों के काम 28:16, पौलुस को उस सिपाही के साथ अकेले रहने की अनुमति दी गई जो उसकी रखवाली कर रहा था। प्रेरितों के काम 28 23 में नीचे उतरते हुए, जब उन्होंने उसके लिए एक दिन नियुक्त किया, तो वे बड़ी संख्या में उसके ठहरने के स्थान पर आए। सुबह से शाम तक, वह उन्हें परमेश्वर के राज्य की गवाही देते हुए और मूसा की व्यवस्था और भविष्यद्वक्ताओं से यीशु के बारे में उन्हें समझाने की कोशिश करते हुए, उनके सामने व्याख्या करता रहा।

और जो कुछ उसने कहा उससे कुछ तो आश्चर्य थे, परन्तु अन्य अविश्वासी थे। और आपस में असहमत होकर पौलुस के यह कहने के बाद चले गए, कि पवित्र आत्मा ने यशायाह भविष्यद्वक्ता के द्वारा तुम्हारे बापदादों से ठीक ही कहा था, यशायाह छः, इन लोगों के पास जाकर कह, तुम सुनोगे, परन्तु कभी नहीं समझो, और तुम सचमुच देखोगे, परन्तु कभी समझ न पाओगे। क्योंकि इन लोगों का मन सुस्त हो गया है, और वे कानों से सुन भी नहीं पाते, और उन्होंने अपनी आंखें मूंद ली हैं, और अपनी आंखें मूंद ली हैं, कि ऐसा न हो कि वे अपनी आंखों से देखें, और अपने कानों से सुनें, और समझें उनके मन से, और फिरो, और मैं उन्हें चंगा करूंगा।

यशायाह छः, नौ, और दस। इसलिए, यह जान लो कि परमेश्वर का यह उद्धार अन्यजातियों के पास भेजा गया है। वे सुनेंगे। वह वहाँ अपने खर्च पर पूरे दो साल रहा और अपने पास आने वाले सभी लोगों का स्वागत करता रहा, और परमेश्वर के राज्य का प्रचार करता रहा और बिना किसी रोक-टोक के प्रभु यीशु मसीह के बारे में सिखाता रहा।

माल्टा छोड़कर, प्रेरितों का दल रोम की ओर चल पड़ा, जहाँ वे कई पड़ावों और कुछ ज़मीनी यात्रा के बाद पहुँचे। लूका ने लिखा, उद्घरण, जब हम रोम में दाखिल हुए, तो पौलुस को उस सिपाही के साथ अकेले रहने की अनुमति दी गई जो उसकी रखवाली कर रहा था। प्रेरितों के काम 28:16.

पॉल अपने रिवाज के अनुसार आराधनालय में नहीं जा सकता था, लेकिन उसे आगंतुकों से मिलने की अनुमति थी, इसलिए उसने अपने दो साल के कारावास को सुसमाचार प्रचार के अवसर में बदल दिया। पहुँचने के तीन दिन बाद, उसने यहूदी नेताओं को बुलाया, और जब वे पहुँचे, तो उसने यहूदी धर्म के खिलाफ आरोपों में अपनी बेगुनाही की घोषणा की, जिसकी पुष्टि रोमियों ने की थी। पॉल ने समझाया कि जब यहूदियों ने विरोध किया था, तो उसने कैसर से अपील की थी।

पद 17 और 19. वह रोम में अपने यहूदी आगंतुकों के साथ सीधा था। पद 20 को उद्धृत करें, इस कारण से, इसलिए, मैंने आपसे मिलने और आपके साथ बात करने के लिए कहा है, क्योंकि यह इस्राएल की आशा के कारण है कि मैं इस जंजीर को पहन रहा हूँ।

बाख ने पॉल के शब्दों पर प्रकाश डाला। उद्घरण, यह ध्यान देने योग्य बात है कि यह इज़राइल की कहानी है जो अभी भी बताई जा रही है, यहाँ तक कि दो खंडों, ल्यूक और प्रेरितों के काम के अंत में भी। इज़राइल की आशा की कहानी दुनिया की आशा की कहानी भी है।

यहीं पर ल्यूक का युगांतशास्त्र हमें परमेश्वर के राज्य और यीशु को उसके मसीहा के रूप में ले जाता है। बंद करें। उद्घरण, बाख, ए थियोलॉजी ऑफ़ ल्यूक एंड एक्ट्स, पृष्ठ 403।

यहूदी नेताओं ने पौलुस से कहा कि उन्हें यहूदिया में रहने वाले यहूदियों से उसके बारे में कोई संदेश नहीं मिला है। ईसाई धर्म का हवाला देते हुए, वे उसके विचार सुनने की इच्छा व्यक्त करते हैं क्योंकि हर जगह लोग इस संप्रदाय के खिलाफ बोल रहे हैं। श्लोक 22.

बहुत से यहूदी पौलुस की बातें सुनने आए और पूरे दिन उसने उन्हें परमेश्वर के राज्य के बारे में सिखाया। खास तौर पर, पद 23, सुबह से शाम तक उसने उन्हें समझाया, परमेश्वर के राज्य की गवाही दी और मूसा की व्यवस्था और भविष्यवक्ताओं दोनों से यीशु के बारे में उन्हें समझाने की कोशिश की। पद 23.

परिणामस्वरूप, कुछ लोगों ने मसीह पर विश्वास किया, और कुछ ने नहीं। जब पौलुस ने अपने समय में इस्राएलियों के अविश्वास के बारे में यशायाह के कड़े शब्दों को उद्धृत किया, तो वे आपस में असहमत हो गए और अलग हो गए। प्रेरितों के काम 28:24 से 27.

और इस प्रकार, जैसा कि मार्शल ने उल्लेख किया, उद्धरण, जैसे पिता, वैसे ही बच्चे। उद्धरण बंद करें, मार्शल, प्रेरितों के काम 4:24। पौलुस ने उन शब्दों का हवाला दिया जो परमेश्वर ने विद्रोही इस्राएलियों से कहने के लिए यशायाह को दिए थे।

और मार्शल कहते हैं, जैसा पिता, वैसे बच्चे। पौलुस ने यहूदियों को दिए अपने शब्दों का समापन इस प्रकार किया, इसलिए, तुम्हें यह ज्ञात होना चाहिए कि परमेश्वर का यह उद्धार अन्यजातियों के लिए भेजा गया है। वे सुनेंगे।

पद 28. इस प्रकार पौलुस ने सुसमाचार बाँटने के अपने तरीके का पालन किया, पहले यहूदियों को, फिर पहले यहूदियों को, फिर यूनानियों को भी। रोमियों 1:16.

भूतकाल महत्वपूर्ण है। उद्धार भेजा गया है। प्रेरितों ने केवल अन्यजातियों के बीच परमेश्वर के कार्य की भविष्यवाणी नहीं की है, बल्कि यहाँ पौलुस ने अन्यजातियों के लिए उद्धार भेजे जाने की पुष्टि की है जो एक ऐतिहासिक तथ्य है।

डेविड पीटरसन, प्रेरितों के कार्य, पृष्ठ 718. लूका ने प्रेरितों के कार्य की पुस्तक का समापन यह रिपोर्ट करके किया है कि पौलुस दो साल तक घर में नज़रबंद रहा। उसने कई आगंतुकों का साहसपूर्वक और स्वतंत्र रूप से स्वागत किया, परमेश्वर के राज्य की घोषणा की और उन्हें प्रभु यीशु मसीह के बारे में सिखाया।

पद 30 और 31. इस प्रकार रोमी कारावास के दौरान पौलुस का ध्यान मसीहा के रूप में यीशु पर था, जो यहूदियों की आशा की आशा थी। इसलिए, उसने यहूदी आगंतुकों को सुसमाचार सुनाया, यह दिखाते हुए कि मसीह पुराने नियम के संदेश की पूर्ति है।

उन्होंने यीशु में अविश्वास की निंदा करने में संकोच नहीं किया क्योंकि यशायाह ने अपने समय में ईश्वर में अविश्वास की निंदा की थी। पॉल ने यहूदी नेताओं को यह बताने में भी संकोच नहीं किया कि भगवान ने उन अन्यजातियों को मुक्ति का संदेश भेजा है जो इसका जवाब दे रहे हैं। ल्यूक ने पॉल के संदेश को संक्षेप में ईश्वर के आध्यात्मिक नियम पर केंद्रित बताया।

अधिनियम 28 के श्लोक 23 और 31 में राज्य के समावेश पर ध्यान दें। 23, पॉल ने परमेश्वर के राज्य की गवाही दी। 23, और 31, अंतिम पद, परमेश्वर के राज्य की घोषणा करता है।

यह एक समावेश है. एक ही अवधारणा, यहाँ तक कि एक जैसे शब्द भी परिच्छेद के दोनों सिरों पर हैं, जो इसे विषय के इर्द-गिर्द एकीकृत करते हैं। इस मामले में, नियम, शासन, भगवान का राज्य।

अधिनियम 28 के छंद 23 और 31। ल्यूक ने पॉल के संदेश को भगवान के आध्यात्मिक शासन, राज्य और ईसाई धर्म पर केंद्रित के रूप में संक्षेप में प्रस्तुत किया। लार्किन सही है.

" यह सुसमाचार संदेश को संदर्भित करने का एक संक्षिप्त तरीका मात्र नहीं था, बल्कि परमेश्वर का राज्य पवित्र यहूदियों के हृदय में प्रवेश करने का मार्ग था। और अच्छी खबर यह थी कि परमेश्वर का शासन उनके बीच मसीहा यीशु के विजयी जीवन, मृत्यु और पुनरुत्थान के उत्कर्ष और उनके उद्धार आशीर्वाद के माध्यम से था।" लार्किन एक्ट्स, पृष्ठ 388।

सुसमाचार संदेश को संदर्भित करने का एक संक्षिप्त तरीका मात्र नहीं है। प्रेरितों के काम 1:3, 8:12, 19:8, 25, 28:31। सुसमाचार संदेश को संदर्भित करने का एक संक्षिप्त तरीका मात्र नहीं है।

प्रेरितों के काम 1:3, 8:12, 19:8, अध्याय 20, पद 5, 28:31। परमेश्वर का राज्य पवित्र यहूदी के हृदय में प्रवेश करने का मार्ग था। लूका 13:28-29, लूका 14:15, 19:11, 23:42-51, और प्रेरितों के काम 1:6।

उन आयतों को दोहराते हुए। लूका 13:28-29, लूका 14:15, लूका 19:11, 23:42-51, और प्रेरितों के काम 1:6। प्रेरितों के काम का अंतिम अंश परमेश्वर के नए नियम के लोगों के बारे में सहायक निर्देश प्रदान करता है।

कम से कम तीन बिंदु ध्यान देने योग्य हैं। पहला, प्रेरितों के काम की पुस्तक परमेश्वर के राज्य, सुसमाचार और यीशु के बारे में है। पौलुस अपने यहूदी आगंतुकों को यह विश्वास दिलाना चाहता है कि यीशु ही पुराने नियम का मसीहा है, जो नियमों के बीच एकता को दर्शाता है।

ये तीनों विचार प्रेरितों के काम में काफी हद तक एक दूसरे से मिलते-जुलते हैं और चर्च को परिभाषित करते हैं। इसलिए, विश्वासी, तीन उद्देश्यों के प्रकाश में, परमेश्वर का राज्य हैं, हम परमेश्वर के राज्य के विषय हैं। सुसमाचार, हम सुसमाचार में विश्वासी हैं।

यीशु, हम उसके प्रेमी हैं जो हमारे लिए मरा और परमेश्वर के दाहिने हाथ पर राज्य करता है। इसलिए, विश्वासी परमेश्वर के राज्य के विषय हैं, सुसमाचार में विश्वास करते हैं, और उसके प्रेमी हैं जो उनके लिए मरा और परमेश्वर के दाहिने हाथ पर राज्य करता है। इसलिए, दूसरा, प्रेरितों के काम, शुरू से अंत तक, हमें सुसमाचार के महत्व से प्रभावित करता है।

प्रारंभ से, अधिनियम 1:8, तुम आत्मा प्राप्त करोगे और यहूदिया से लेकर पृथ्वी के छोर तक मेरे गवाह बनोगे। प्रेरितों के काम 28:23, पौलुस सुबह से शाम तक उन्हें मूसा की व्यवस्था और भविष्यद्वक्ताओं की व्यवस्था से यीशु के विषय में समझाने का प्रयत्न करता रहा। और फिर प्रेरितों

के काम की पुस्तक का अंतिम शब्द परमेश्वर के राज्य और प्रभु यीशु मसीह के बारे में शिक्षा की घोषणा करता है।

दूसरा, इसलिए, अधिनियम, शुरू से अंत तक, अधिनियम 1:8, अधिनियम 28:23, और 31, हमें सुसमाचार प्रचार के महत्व से प्रभावित करते हैं। ल्यूक ने अपने सुसमाचार को एक खुले अंत वाले निष्कर्ष के साथ समाप्त किया, जिसमें पॉल को दो साल के लिए रोम में नजरबंद रखा गया, 28:30, पूरे दो साल, ईएसवी। इस प्रकार ल्यूक पहले पाठकों और बाद के सभी लोगों को प्रभु यीशु पर विश्वास करने के लिए आमंत्रित करता है और आप बच जायेंगे।

प्रेरितों के काम 16:31, फिलिप्पी के जेलर को पौलुस और बरनबास के शब्द। प्रेरितों के काम 16:31, पौलुस सभी पाठकों को, जिनमें प्रथम भी शामिल हैं, प्रभु यीशु पर विश्वास करने और बचाए जाने के लिए आमंत्रित करता है। यीशु के शिष्यों को, 12 की तरह, मनुष्यों के मछुआरे होने की जिम्मेदारी और विशेषाधिकार प्राप्त है, लूका 5:10, उन लोगों के साथ सुसमाचार साझा करना जो प्रभु को नहीं जानते।

तीसरा, पश्चिम में विश्वास करने वाले, जो कभी-कभी सुसमाचार के लिए कष्टों से अधिक आराम को प्राथमिकता देते हैं, उन्हें श्रीलंका के इंजील प्रचारक अजीत फर्नांडो के बुद्धिमान शब्दों की आवश्यकता है। हमारी संस्कृति से बहुत अलग संस्कृति में मसीह के लिए उनकी वफ़ादार सेवा उन्हें बाइबल की उन सच्चाइयों को देखने में सक्षम बनाती है जिन्हें हम बहुत आसानी से नज़रअंदाज़ कर देते हैं। मैंने कई सालों तक नेल्सन जेनिंग्स, एक मिशनोलॉजिस्ट के साथ पढ़ाया, जिन्होंने मुझे अपने शब्दों और अपने उदाहरण से बहुत सी बातें सिखाईं।

उन्होंने मुझे जो बातें सिखाईं, उनमें से एक यह है कि हमें परमेश्वर के वचन को समझने में मदद के लिए पूरे चर्च की ज़रूरत है क्योंकि मसीह के लिए जीने वाले अलग-अलग संस्कृतियों और संदर्भों में लोग शास्त्रों के संदेश को समझते हैं जो वास्तव में वहाँ है और इसे उन तरीकों से लागू करते हैं जिन्हें हम कभी-कभी नहीं देख पाते क्योंकि हम एक अलग सांस्कृतिक संदर्भ में हैं। हमें परमेश्वर के वचन को ठीक से समझने के लिए पूरे चर्च की ज़रूरत है जैसा कि परमेश्वर ने इरादा किया था। मसीह की सेवा करते हुए और कष्ट सहते हुए परमेश्वर की संप्रभुता के प्रति पौलुस के समर्पण पर विचार करते हुए, फर्नांडो ने प्रेरितों के काम पर अपनी टिप्पणी में लिखा है, "सुसमाचार प्रचार संप्रभुता की छाया में पनपता है।"

पॉल के मंत्रालय की गहराई और प्रभावशीलता उसके अभाव, संप्रभुता और आज्ञाकारिता के मिश्रण से बहुत बढ़ गई थी। जब आप इसमें संप्रभु ईश्वर के संचालन को जोड़ते हैं जो त्रासदियों को जीत में बदल सकता है, तो आपको एहसास होता है कि अभाव डरने की बात नहीं है बल्कि ईश्वर के लिए अपनी महिमा व्यक्त करने का एक अवसर है। फर्नांडो, अधिनियम पृष्ठ 629 पर एनआईवी आवेदन टिप्पणी।

मेरे लिए यह कहना आसान है कि किसने कभी अभाव का अनुभव नहीं किया है। अद्भुत, कठोर और फिर भी ईमानदारी से, फर्नांडो उन शब्दों को कहते हैं। उन्होंने श्रीलंकाई शहरों में सुसमाचार ले जाने में अभाव का अनुभव किया है।

चौथा, प्रेरितों के काम 28 में पौलुस का अनुभव इस तथ्य को रेखांकित करता है, जैसा कि उसने दूसरे तीमुथियुस में लिखा था, उद्धरण, प्रभु को याद करो, यीशु मसीह को याद करो, जो मरे हुओं में से जी उठा और दाऊद के वंशजों में से मेरे सुसमाचार के अनुसार है जिसके लिए मुझे अपराधी की तरह बंधे रहने की हद तक पीड़ा सहनी पड़ी, लेकिन परमेश्वर का वचन बंधा नहीं है। दूसरे तीमुथियुस की आयत आठ और नौ। मुझे लगा कि यह दूसरा तीमुथियुस 2 है।

यह दूसरा तीमुथियुस दो, आठ और नौ है। बेन विदरिंगटन III के शब्द अधिनियम 28 और वास्तव में, अधिनियमों की पूरी पुस्तक के सारांश के रूप में काम करते हैं। "ल्यूक की मुख्य चिंता पाठक को ईश्वर के अजेय शब्द के बारे में एक अनुस्मारक छोड़ना है, जिसे कोई बाधा नहीं, कोई जहाज़ की तबाही नहीं, जहरीला नहीं, जहाज़ की तबाही नहीं, जहरीले सांप नहीं, रोमन अधिकारी साम्राज्य के दिल और लोगों के दिलों तक पहुंचने में बाधा नहीं डाल सकते। जो लोग वहां रहते थे। यह वही संदेश और मिशन है जो आज चर्च को प्रेरित करता है, उसे आगे बढ़ने के आदेश देता है और हमें पॉल जैसे लोगों के व्यवहार का अनुकरण करने के लिए कहता है जो साहसपूर्वक और स्वतंत्र रूप से बोलते थे, मानते थे कि कोई भी बाहरी बाधा उस भगवान के लिए बहुत बड़ी नहीं थी जिसने यीशु को उठाया था। दुनिया को बचाने में सफल होना।" विदरिंगटन, प्रेरितों के कार्य, पृष्ठ 815 और 816।

यह अधिनियम की पुस्तक में भगवान के लोगों का वर्णन करने वाले मेरे नौ रूपांकनों का समापन करता है। अब हम एक्ट्स की पुस्तक पर हॉवर्ड मार्शल की उत्कृष्ट टिप्पणी की ओर बढ़ते हैं, विशेष रूप से कई शीर्षकों के तहत एक्ट्स के धर्मशास्त्र के उनके उपचार की ओर। मैं बस उनका एक सिंहावलोकन देता हूँ।

इतिहास में ईश्वर का उद्देश्य, इतिहास में ईश्वर के उद्देश्य की निरंतरता, नंबर एक। नंबर दो, मिशन, मिशन और संदेश। नंबर तीन, विरोध के बावजूद प्रगति।

चौथा, ईश्वर के लोगों में अन्यजातियों का समावेश। यह विषय अधिनियमों के धर्मशास्त्र के प्रति हमारी चिंता में प्रतिध्वनित हुआ है। और अंत में, चर्च का जीवन और संगठन।

हावर्ड मार्शल ने हमें बहुत सी उपयोगी रचनाएँ दी हैं, जिनमें पादरी पत्रों पर विशेष ध्यान दिया गया है, जिन पर उन्होंने एक बड़ी टिप्पणी लिखी है, ल्यूक का सुसमाचार, और प्रेरितों के काम की पुस्तक, जिसके बारे में उन्होंने टिप्पणियाँ लिखी हैं और कई अन्य चीज़ें जो उन्होंने लिखी हैं। प्रेरितों के काम का धर्मशास्त्र, हावर्ड मार्शल, प्रेरितों के काम। हालाँकि हम इस बात पर ज़ोर देते हैं कि ल्यूक ने ईसाई धर्म की शुरुआत के बारे में एक ऐतिहासिक वर्णन लिखा है और हम इस विचार को अस्वीकार करते हैं कि उन्होंने एक विशेष रूप से विशिष्ट धार्मिक दृष्टिकोण को प्रस्तुत करने के लिए लिखा था, फिर भी हमें उस धार्मिक दृष्टिकोण की प्रकृति के बारे में पूछना चाहिए, जो प्रेरितों के काम में अभिव्यक्त होता है।

इसमें कोई संदेह नहीं है कि ल्यूक इस कहानी को धार्मिक महत्व के रूप में देखता है और जिस तरह से वह इसे बताता है, उसने इसके महत्व को सामने लाया है। निःसंदेह, यह यह कहने से कुछ अलग है कि उन्होंने इतिहास को एक विदेशी धार्मिक ढांचे में प्रस्तुत करके उसकी

पुनर्व्याख्या की है। मार्शल की एक अन्य पुस्तक ल्यूक, इतिहासकार और धर्मशास्त्री है, जिसमें उनका तर्क है कि ल्यूक उन दोनों चीजों में से एक था।

वह थ्यूसीडाइड्स और पॉलीबियस जैसे प्राचीन इतिहासकार थे, जो सटीकता के लिए प्रयासरत थे। ये सच है। अन्य प्राचीन इतिहासकारों ने संपूर्ण परिदृश्य गढ़े, हवा-हवाई भाषण दिए, इत्यादि।

लेकिन पॉलीबियस ने ऐसा नहीं किया। वास्तव में, उन्होंने इतिहास के अपने सिद्धांतों को सामने रखा और उनका पालन करने की कोशिश की, हमेशा पूरी तरह से नहीं, लेकिन उन्होंने भाषण वगैरह का आविष्कार नहीं किया। अब, ल्यूक ने अधिनियमों की पुस्तक में भाषणों को अपने शब्दों में सारांशित किया, लेकिन उसने हवा से चीजों का आविष्कार नहीं किया।

वह प्रेरितों के काम की पुस्तक को इतिहास के रूप में प्रस्तुत करता है। इसलिए, लूका एक इतिहासकार है, लेकिन वह केवल इतिहासकार ही नहीं है; वह इतिहासकार और धर्मशास्त्री भी है। वह प्रेरितों के काम के इतिहास के विशेष पहलुओं पर जोर देता है, जैसा कि हम एफएफ ब्रूस, डेनिस जॉनसन और प्रेरितों के काम में चर्च पर मेरे अपने नोट्स की मदद से पहले ही देख चुके हैं।

वह ईसाई धर्मशास्त्र को संप्रेषित करने के लिए इतिहास के कुछ पहलुओं पर जोर देता है। और पहला बिंदु, जैसा कि हमने हर लेखक से बात की है, जिसमें बाख भी शामिल है, जिसका नाम मैं अभी दी गई सूची में शामिल करूंगा, कहता है कि इतिहास में ईश्वर का उद्देश्य वास्तव में एक सर्वोपरि विचार है जो प्रेरितों के काम की पुस्तक के अंतर्गत आता है, इतिहास में ईश्वर के उद्देश्य की निरंतरता। मार्शल लिखते हैं कि प्रेरितों के काम में दर्ज कहानी को पुराने नियम में दर्ज ईश्वर के शक्तिशाली कार्यों और यीशु की सेवकाई के साथ निरंतरता में देखा जाता है।

इस विशेषता को व्यक्त करने के लिए धर्मशास्त्रीय शब्दावली में प्रचलित वाक्यांश मोक्ष इतिहास है। इस संदर्भ में, यह वाक्यांश यीशु और प्रारंभिक चर्च के जीवन में विभिन्न घटनाओं को ऐतिहासिक कार्यों के रूप में समझने को संदर्भित करता है जिसमें स्वयं ईश्वर की गतिविधि प्रकट होती है। बेशक, ईश्वर सभी इतिहास का प्रभु है।

लेकिन इस्राएल के इतिहास और मसीह के इतिहास और नए नियम में ईसाई चर्च में, ईश्वर इस इतिहास में खुद को प्रकट करता है। ईसाई धर्म उस ईश्वर की ओर निर्देशित है जिसने खुद को इतिहास के मंच पर उद्धारकर्ता के रूप में प्रकट किया है। विश्वास की इस समझ की तुलना कभी-कभी अस्तित्ववादी दृष्टिकोण से की जाती है, जिसके अनुसार विश्वास अनिवार्य रूप से ऐतिहासिक तथ्यों से स्वतंत्र है।

खैर, हमें बताया गया है कि इससे कोई फ़र्क नहीं पड़ता कि वे चीज़ें घटित हुईं या नहीं, वे दर्ज हैं, शायद उनमें कुछ ऐतिहासिक सच्चाई हो, लेकिन कुछ पौराणिक तत्व भी हों। यह महत्वपूर्ण नहीं है। मुख्य बात यह है कि वे क्या संदेश देते हैं।

हम मार्शल के साथ मिलकर कहते हैं कि यह गलत है। यह कहना कि यह मूल रूप से एक अस्तित्ववादी संदेश था, इसका मतलब है कि यह ईश्वर के उद्धार की घोषणा थी, जिसमें इतिहास

से बहुत कम या कोई समर्थन नहीं था और श्रोताओं से विश्वास और आज्ञाकारिता की मांग की गई थी। ल्यूसिडस ने दावा किया कि उसने इस संदेश को यीशु के बारे में एक ऐतिहासिक रिपोर्ट में बदल दिया और इस तरह यीशु की कहानी को इतिहास में चल रहे कार्यों के एक हिस्से में बदल दिया, जो मूल रूप से इतिहास का अंत था और अब इतिहास का मध्य बन गया।

यह हंस कोन्ज़ेलमैन की पुस्तक में कृत्यों के धर्मशास्त्र पर आधारित थीसिस है। मार्शल कहते हैं, यह साक्ष्य की गलत व्याख्या है। इतिहास से स्वतंत्र अस्तित्ववादी संदेश कभी नहीं था, बल्कि ल्यूक द्वारा प्रस्तुत मोक्ष इतिहास की प्रस्तुति ईसाई धर्म की मूल समझ थी।

मोक्ष के ऐतिहासिक और अस्तित्ववादी दृष्टिकोणों के बीच अंतर करना एक गलत विरोधाभास पैदा करना है। बल्कि सच्चाई यह है कि ऐतिहासिक तथ्य जिनमें ईश्वर को सक्रिय रूप में देखा गया था, ईश्वर के प्रति प्रतिबद्धता और आज्ञाकारिता की अस्तित्वगत प्रतिक्रिया की मांग करते हैं। इन ऐतिहासिक तथ्यों के अलावा, विश्वास का कोई आधार नहीं हो सकता।

इसका मतलब यह नहीं है कि ईसाई आस्था कुछ घटनाओं में आस्था है या यह आस्था तभी संभव है जब यह साबित किया जा सके कि कुछ घटनाएँ घटित हुई हैं और वे ईश्वर के कार्य हैं। इसका मतलब यह है कि यदि घटनाओं की वास्तविकता से इनकार किया जाता है, तो विश्वास का कोई आधार नहीं है। अधिनियम 15:17, 1 कुरिन्थियों, क्षमा करें, 1 कुरिन्थियों 15:17।

यदि मसीह जीवित नहीं हुआ, तो तुम्हारा विश्वास व्यर्थ है और तुम अब भी अपने पापों में पड़े हो। 1 कुरिन्थियों 15:17. प्रभु ने मुझे अपनी ओर आकर्षित करने के लिए दो चीजों का उपयोग किया, मैं एक 21 वर्षीय युवक था जिसे एक धर्मात्मा व्यक्ति ने, जिसके साथ मैंने गर्मियों में काम किया था जब मैं कॉलेज जा रहा था, एक धर्मात्मा व्यक्ति ने ईश्वर के वचन की ओर इशारा किया था। मदरसा जा रहा हूँ.

उनमें से एक था पॉल में त्रिएकत्व का सिद्धांत। मैंने इसे हर जगह देखा, और मैंने कहा, इस तरह की चीज़ का आविष्कार करना कितनी मूर्खतापूर्ण बात है। नहीं, यह जीवित परमेश्वर का हमेशा से यही तरीका रहा होगा क्योंकि यह रहस्यमय है, और इस तरह की चीज़ का आविष्कार करना एक बाधा होगी।

नहीं, परमेश्वर हमेशा पवित्र त्रित्व रहा है और खास तौर पर पौलुस ने अपने लेखन के मूल में इसे कई बार प्रकट किया है। वह त्रित्व पर ध्यान केंद्रित भी नहीं कर रहा है, लेकिन उसके पत्र त्रित्ववादी हैं। दूसरी बात जो वास्तव में परमेश्वर ने मेरे दिल को चुभने के लिए इस्तेमाल की, वह थी 1 कुरिन्थियों 15 की ईमानदारी जहाँ प्रेरित कहता है, यदि मसीह को नहीं उठाया गया होता, तो ये चीज़ें प्राप्त होतीं।

हम मसीह के झूठे गवाह हैं। हम मूर्खों का एक समूह हैं जो अपने जीवन को एक ऐसे संदेश के लिए समर्पित कर रहे हैं जो सिर्फ़ एक परी कथा है, और मार्शल ने जो उद्धृत किया है, उपदेश व्यर्थ है, आपका विश्वास व्यर्थ है, आपका विश्वास व्यर्थ है यदि मसीह को नहीं उठाया गया है और आप अभी भी अपने पापों में हैं। बेशक, इसके ठीक बाद, 1 कुरिन्थियों 15 में, मुझे लगता है कि यह श्लोक 20 है, पॉल कहते हैं, लेकिन मसीह को उठाया गया है, मृतकों में से ज्येष्ठ, और वह

उसकी तुलना आदम और अन्य से करता है, यह तर्क देते हुए कि यीशु का पुनरुत्थान परमेश्वर के लोगों के पुनरुत्थान का आधार है, जो कि अंतिम ईसाई आशा है।

इतिहास महत्वपूर्ण है। बाइबल का धर्मशास्त्र ईश्वर पर आधारित है, जो इतिहास में काम करने वाला जीवित ईश्वर है। जैसा कि कार्ल हेनरी ने कई साल पहले कहा था, वह ईश्वर है जो काम करता है और वह ईश्वर है जो बोलता भी है और उसका रहस्योद्घाटन कर्म शब्द रहस्योद्घाटन है।

परमेश्वर निर्गमन में, यीशु के पुनरुत्थान में, पिन्तेकुस्त के दिन आत्मा के उंडेले जाने में कार्य करता है और वह अपने कार्यों की व्याख्या करने के लिए बोलता है। इस मूल बिंदु के कई महत्वपूर्ण पहलुओं पर ध्यान दिया जाना चाहिए। सबसे पहले, प्रेरितों के काम में दर्ज घटनाओं को परमेश्वर की इच्छा और उद्देश्य से लाया गया माना जाता है।

यीशु की मृत्यु और पुनरुत्थान की कहानी एक ऐसी घटना का सबसे स्पष्ट उदाहरण है, जिसका पता परमेश्वर की निश्चित योजना और पूर्वज्ञान से लगाया जा सकता है, प्रेरितों के काम 2, 23. लेकिन यही बात चर्च के जीवन की घटनाओं के बारे में भी सच है। इस प्रकार, उदाहरण के लिए, यह निहित है कि चर्च ने जिस विरोध का अनुभव किया, वह यीशु के प्रति ईश्वरीय रूप से पूर्वबताए गए विरोध के समान ही था, प्रेरितों के काम 4:27 से 29.

दूसरी बात यह है कि चर्च का जीवन धर्मग्रंथ की पूर्ति में घटित होता हुआ माना जाता था। पुराने नियम में की गई भविष्यवाणियाँ चर्च के इतिहास, आत्मा के उंडेले जाने और मुक्ति की घोषणा को नियंत्रित करती हैं, अधिनियम 2:17 से 21। अन्यजातियों के लिए मिशन, अधिनियम 13:47, और चर्च में उनका समावेश, अधिनियम 15:16 से 18, और समग्र रूप से यहूदियों का सुसमाचार पर प्रतिक्रिया देने से इनकार, अधिनियम 28:25 से 27।

तीसरा, चर्च का जीवन महत्वपूर्ण चरणों में ईश्वर द्वारा निर्देशित था। कभी-कभी आत्मा ने चर्च को निर्देशित किया, क्या करना है, 13 से 15, 28:16, 6। अन्य समय में, स्वर्गदूतों ने ईसाई मिशनरियों से बात की, 5:19 और 20:8, 26, 27:23, या संदेशों की मध्यस्थता की गई भविष्यवक्ताओं, 11:28, 20:11, और 12. इस अवसर पर, प्रभु स्वयं अपने सेवकों के सामने प्रकट हुए, 18:9, और 23:11।

चौथा, परमेश्वर की शक्ति चिन्हों और चमत्कारों में देखी गई जो यीशु के नाम से प्रदर्शित किए गए थे। अधिनियम 3, 16 और 14, 3. परिणामस्वरूप, ईसाई मिशन का कार्य ईश्वर द्वारा किया गया कहा जा सकता है। ल्यूक और एक्ट्स दोनों में इतिहास और धर्मशास्त्र की अविभाज्यता के संबंध में, लेकिन एक्ट्स के संदर्भ में, मार्शल ने केवल चार बिंदुओं को रेखांकित किया है।

अधिनियमों में घटनाएँ ईश्वर की इच्छा और उद्देश्य से घटित होती हैं। दो, वे पवित्रशास्त्र की पूर्ति हैं। तीन, ईश्वर चर्च के जीवन को विभिन्न तरीकों से निर्देशित करता है।

चौथा, कभी-कभी, वह प्रेरितिक संदेश के साथ संकेत और चमत्कार भी लाता है। दो, मिशन और संदेश. एक्ट्स मिशन के बारे में एक किताब है।

अधिनियम 1:8 को इसकी सामग्री के सारांश के रूप में लेना अनुचित नहीं है। तुम यरूशलेम और सारे यहूदिया और सामरिया में और पृथ्वी की छोर तक मेरे गवाह ठहरोगे। उद्घरण बंद करें।

ईसाई चर्च का उद्देश्य यीशु की गवाही देना था। यह, एक विशेष अर्थ में, उन 12 का कार्य था जो यीशु के सांसारिक मंत्रालय के दौरान उसके साथ थे और उसे मृतकों में से उठते हुए देखा था, अध्याय 1, छंद 21 और 22, और इसलिए विशेष रूप से यीशु के बारे में गवाही देने के लिए सुसज्जित थे इजराइल। लेकिन यह कार्य किसी भी तरह से 12 तक ही सीमित नहीं था।

और कई अन्य ईसाइयों ने प्रचार में अपना हिस्सा लिया। जो संदेश घोषित किया गया था, वह पूरी किताब में बिखरे हुए सार्वजनिक संबोधनों की एक श्रृंखला में वर्णित है। मोटे तौर पर, इसका संबंध इस तथ्य से था कि यीशु, जिन्हें यहूदियों द्वारा मौत की सजा दिए जाने के बाद भगवान ने मृतकों में से जीवित किया था, को यहूदी मसीहा और भगवान घोषित किया गया था, और इसलिए मोक्ष का स्रोत घोषित किया गया था।

यह उसके द्वारा ही था कि मनुष्यों को पापों की क्षमा प्रदान की गई। और यह उसके द्वारा ही था कि आत्मा का उपहार कलीसिया में आया था। उद्धारकर्ता के रूप में यीशु किस तरह कार्य करता है, यह प्रेरितों के काम में स्पष्ट नहीं किया गया है।

प्रेरितों के काम 20:28 को छोड़कर, उनकी मृत्यु और उद्धार की संभावना के बीच कोई बहुत करीबी संबंध नहीं बनाया गया है। और जो धारणा बनती है वह यह है कि मृतकों में से जी उठने और पिता द्वारा महिमामंडित किए जाने के कारण ही यीशु को उद्धार प्रदान करने और कलीसिया में अपने शक्तिशाली कार्य करने का अधिकार प्राप्त हुआ। इस प्रकार, यीशु का पुनरुत्थान और महिमामंडन ही प्रेरितों के काम में उपदेश के केंद्र में है।

मोक्ष से जुड़े आशीर्वादों को पापों की क्षमा और आत्मा के उपहार के रूप में संक्षेपित किया गया है। बाद वाला आनंद और आध्यात्मिक शक्ति के अनुभवों में प्रकट हुआ। प्रेरितों के काम में मसीह के साथ मिलन के पॉलिन अनुभव के बारे में बहुत कम कहा गया है।

और कोई यह मान सकता है कि लूका का धर्म कम रहस्यमय है। यह कहना अधिक सही होगा कि लूका ने पॉल के समान ही मूल ईसाई अनुभव का वर्णन अलग-अलग शब्दावली में किया है। प्रेरितों के काम में प्रार्थना और विभाजन को दिया गया स्थान, साथ ही साथ अन्य भाषाओं में बोलने और भविष्यवाणी करने जैसे करिश्माई अनुभवों को दिया गया स्थान, यह दर्शाता है कि इस पुस्तक में ईश्वर के साथ संवाद का एक वास्तविक और गहरा तत्व है।

इसके अलावा, हालाँकि शाऊल के धर्म परिवर्तन में, जो पॉल बन गया, यह स्पष्ट नहीं किया गया है, जब यीशु कहते हैं, तुम मुझे क्यों सता रहे हो? यीशु मसीह के साथ एकता के सिद्धांत को मानते हैं। यीशु को सताते हुए, ईसाइयों को सताते हुए, पॉल उनके प्रभु को सता रहा था, जिनसे वे इतने जुड़े हुए थे कि एक को छूना दूसरे को छूना था। प्रेरितों के काम में मुख्य कहानी संदेश के प्रसार से संबंधित है।

यह यरूशलेम में एकत्र हुए सांसारिक यीशु के अनुयायियों के एक छोटे समूह के अस्तित्व से शुरू होता है और वर्णन करता है कि कैसे, आत्मा के उपहार के प्रभाव के तहत, वे यीशु के गवाह बन गए और बढ़ती संख्या में धर्मांतरित हुए। प्रारंभिक अध्याय यरूशलेम में समूह के विकास और एकीकरण को चित्रित करते हैं। अध्याय छह से आगे, हम क्षितिज के विस्तार के प्रति सचेत हैं।

कई पुजारी परिवर्तित हो जाते हैं और साथ ही, ईसाई गवाह यरूशलेम में यहूदी फैलाव से जुड़े विभिन्न सभास्थलों तक पहुंचते हैं। जैसे-जैसे उत्पीड़न के कारण यरूशलेम से कई ईसाइयों को भागना पड़ा, वैसे-वैसे यह संदेश यहूदिया के व्यापक क्षेत्र में फैलने लगा और फिर कुछ सामरियों और यहां तक कि इथियोपिया के एक यात्री के धर्म परिवर्तन के साथ एक निर्णायक कदम आगे बढ़ा। अध्याय नौ के मध्य तक, लेखक "सारे यहूदिया और गलील और सामरिया में चर्च" के बारे में बात कर सकता है।

लेकिन सामरिया को शामिल करने के साथ ही, उन लोगों की ओर पहला महत्वपूर्ण कदम उठाया गया जो पूरी तरह से यहूदी नहीं थे। और उसके तुरंत बाद, विभिन्न घटनाओं ने चर्च को आश्वस्त किया कि उसे गैर-यहूदियों तक सुसमाचार ले जाने के लिए बुलाया गया था। सबसे पहले, संपर्क उन गैर-यहूदियों से था जो पहले से ही आराधनालयों में परमेश्वर की आराधना करते थे, लेकिन जल्द ही अन्य गैर-यहूदी भी संदेश की ओर आकर्षित हो गए।

एक बार जब चर्च अन्ताकिया में मजबूती से स्थापित हो गया, तो गैर-यहूदी मिशन स्थापित नीति बन गई। और अन्ताकिया से, एक जानबूझकर, संगठित मिशन हुआ। यदि पतरस यरूशलेम में चर्च के शुरुआती दिनों में अग्रणी व्यक्ति होता, तो उसे बचपन से लेकर उस बिंदु तक मार्गदर्शन देता जहाँ उसने पहचाना कि सुसमाचार गैर-यहूदियों के लिए था।

इसलिए, अन्ताकिया से मिशन के विकास में पॉल ने अग्रणी भूमिका निभाई। प्रेरितों के काम का दूसरा भाग अनिवार्य रूप से इस बारे में कहानी है कि कैसे पॉल ने अन्य प्रचारकों के साथ मिलकर एशिया माइनर और ग्रीस में चर्चों की स्थापना की। इसलिए अध्याय 20 तक, सुसमाचार को पूर्वी भूमध्यसागरीय दुनिया भर में प्रभावी ढंग से घोषित किया गया है।

पॉल ऐसे बोल सकता है मानो उसका काम पूरा हो गया हो। लेकिन, वास्तव में, हम अभी केवल अध्याय 20 पर ही हैं। और अभी भी पुस्तक का लगभग एक चौथाई भाग आना बाकी है।

हमारे पास इस बात का विवरण है कि कैसे पॉल यरूशलेम की अपनी यात्रा से वापस लौटा और उसे एक झूठे आरोप में गिरफ्तार कर लिया गया। कहानी में अदालतों और राज्यपालों के बीच उसकी विभिन्न प्रस्तुतियों का वर्णन है, जिसके दौरान वह यहूदियों और रोमियों दोनों के खिलाफ खुद का बचाव करता है, अपनी बेगुनाही का विरोध करता है और, वास्तव में, रोमन अधिकारियों से इसकी पुष्टि करवाता है। अंत में, काफी विस्तार से, हमारे पास रोम की उसकी यात्रा का विवरण है।

व्यापक अर्थ में, यह कहा जा सकता है कि वृत्तांत का उद्देश्य यह दिखाना है कि पॉल के व्यक्तित्व में सुसमाचार रोम में कैसे आया। लेकिन यह स्पष्ट है कि एक्ट्स की कहानी, जो मिशनरी विस्तार की कहानी के रूप में शुरू होती है, के अन्य उद्देश्य भी हैं। हमें पूछना चाहिए कि क्या अन्य धार्मिक तत्वों का अधिनियमों में कोई स्थान है।

अपने अगले व्याख्यान में, हम वास्तव में देखेंगे कि उस प्रश्न का उत्तर सकारात्मक है। फिर हम अधिनियमों में कुछ अन्य धार्मिक तत्वों का पता लगाना शुरू करेंगे।

यह ल्यूक-एक्ट्स के धर्मशास्त्र पर डॉ. रॉबर्ट ए. पीटरसन की शिक्षा है।

यह ल्यूक-एक्ट्स के धर्मशास्त्र पर अपने शिक्षण में डॉ. रॉबर्ट ए. पीटरसन हैं। यह सत्र 17 है, पीटरसन, द चर्च इन एक्ट्स, भाग 4, पॉल इन प्रिज़न, बट द गॉस्पेल। मैं, हावर्ड मार्शल, 1) इतिहास में ईश्वर का उद्देश्य, 2) मिशन और संदेश।